आपकी खुशी आपके पास

क्या आप अशांत हैं, क्या आप अवसाद के दौर से गुजर रहे हैं, क्या आपके मिजाज को क्रोध ने वश कर लिया है, क्या आप तनाव से ग्रस्त हैं। क्या आपने कभी सोचा है मन की शांति के लिए रिमोट कंट्रोल आपके पास है। देखिए नॉन स्टॉप, बिना किसी विज्ञापन के, आध्यात्मिकता के गुह्य रहस्यों को स्पष्ट करता हुआ ''पीस ऑफ माइंड चैनल, आपके शहर में उपलब्ध है।

ब्रह्माकुमारीज टांसपोर्ट विंग (शिपिंग एविएशन टूरिज्म) द्वारा ' रिडिफाइनिंग हैप्पीनेस, विषय पर सेमिनार का आयोजन ज्ञानसरोवर परिसर में 26 जुलाई से 30 जुलाई 2013 तक आयोजित किया जा रहा है। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें - ब्र.कु.मीरा, राष्ट्रीय संयोजिका

Email - satservicesttw@gmail.com
Mob.-9920142744, 9413384864

सूचना- ओमशान्ति मीडिया में सेवा के लिए हिन्दी व अंग्रेजी भाषा की जानकारी रखने वाले भाइयों की आवश्यकता है। ईमेल, वेबसाइड तथा साफ्टवेयर की जानकारी रखने वाले भाई की भी आवश्यकता है। ईश्वरीय सेवा के इच्छुक भाई अपना पूरा डाटा इस ईमेल पर भेजें -
E-mail- mediabkm@gmail.com,
Mob.-8107119445

सूचना

आप सभी भाई-बहनों की मांग पर राजयोग प्रवचन माला की पुस्तक 'राजयोग मेडिटेशन' नवीन संस्करण के साथ, भगवान कौन? की गीता का आध्यात्मिक रहस्य पुस्तक, हैप्पीनेस इंडेक्स, कथा सारिता उपलब्ध है। इसे आप ओम शांति मीडिया, शांतिवन कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

हम सुधरेंगे जग सुधरेगा

(स्वामी चक्रपाणि)

गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं कि श्रेष्ठ पुरूष जो आचरण करते हैं, अन्य पुरूष भी उसका अनुसरण करते हैं। अत: श्रेष्ठ कर्मों से श्रेष्ठता प्राप्त करें ताकि अन्य भी पवित्र और लोकमंगलकारी मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित हों। यह ठीक है कि संस्कारों का प्रतिस्थापन सदा शीर्ष से होता है। जो व्यक्तिगत समाज की संरचना या व्यवस्था को प्रभावित करने की क्षमता से युक्त होते हैं, उनका व्यवहार समाज को प्रभावित करता है। इसलिए पहली आवश्यकता है कि जो लोग शीर्ष पर हैं, वे अपने आचरण से अनुशासन, मर्यादा और नैतिकता लायें।

अवधूत गीता में श्रेष्ठता के स्तर को पाने के लिए चार सोपान बताये गये हैं। ये चार सोपान परम पद प्राप्ति का आधार भी है। श्री दत्तात्रेय के अनुसार आसक्ति, द्वेष और क्रोध से मुक्त होना सभी प्राणियों के कल्याणार्थ निरंतर कार्य करना, ब्रह्मज्ञान विषयक बोध पर दृढ़ रहना और धैर्यवान होना, ऐसे तत्व हैं जो मानव में शुद्धि और फिर श्रेष्ठता के भाव विकसित करते हैं। भारतीय संस्कृति में धर्म और नीति का अद्वैत सम्बन्ध है। दोनों पृथक सत्ता रखने के पश्चात भी एक दूसरे से जुड़ी हैं। धर्म हमें आत्मिक दृष्टि से शुद्ध बनाता है जबकि नीति उस शुद्धता का व्यावहारिक पक्ष है। यदि धर्म के सारतत्व और लक्ष्य को समझने में त्रुटि हो जाती है तो नीति भी अशुद्ध हो जायेगी। इसलिए धर्म के यम, नियम और सप्त मर्यादाओं का पालन करते हुए अपनी नीतियों में पवित्रता का लाना परमावश्यक है। तैतिरीय उपनिषद् में विद्या पूर्ण करके अपने घर वापस जाने वाले स्नातक को आशीष प्रदान करने के पश्चात आचार्य कहते हैं कि सत्य बोलो, धर्म का आचरण करो, स्वाध्याय में प्रमाद मत करो। साथ ही यह भी बताते हैं कि माता, पिता, आचार्य तथा अतिथि में देव बुद्धि रखने वाले बनो। एक अन्य स्थान पर आचार्य अपने स्नातक को स्मरण दिलाता है कि आपका ज्ञान लोकमंगल का कारण हो, विद्या अहंकार के लिए नहीं, विनम्रता के लिए है। कभी सम्पत्ति पर, ज्ञान पर गर्व मत करो। वह कार्य करो जो निंदा के योग्य न हो और सबके हित में हो।

जब स्वामी रामतीर्थ जापान गये तो एक युवक ने उनसे प्रश्न किया कि आप बार-बार यह क्यों कहते हैं कि भारत महान है। महान देश परतंत्र नहीं होते। वह तो नौ सौ वर्षों से परतंत्र है। इस पर स्वामीजी ने उत्तर दिया कि भारत एक देश नहीं है, भारत एक धर्म है। वह जापान में भी भगवान बुद्ध के रूप में है, कहीं गुरूनानक के रूप में है, तो कहीं श्रीराम के रूप में। ऐसा धर्मशील और नीतिगत भारत जो विश्व के प्रत्येक उस प्राणी के हृदय में है जो स्वयं श्रेष्ठता प्राप्त कर दूसरों को श्रेष्ठ बना रहा है, परतंत्र हो ही नहीं सकता। आपके भीतर भी भगवान बुद्ध के पंचशील और त्रिरत्न हैं। वहीं भारत है। दुखी की सेवा, करूणा, अहिंसा, सदाचार, सत्य और अस्तेय भारत ही है। धर्म और नीति अमूर्त तत्व है लेकिन व्यवहार में प्रकट होते हैं। सत्य में ये दोनों समाहित हैं। इसलिए ऋग्वेद में ऋषि कहते हैं कि हे अग्ने! असत्य का त्याग करके सत्य को ग्रहण करने की शक्ति दीजिए। हे अग्ने! मुझे उत्तम पथ पर चलने के लिए प्रेरित कीजियेगा। हे अग्ने! हम आघात करने वाले पर प्रत्याघात न करें। कोई हमें श्राप देता है तो उसका प्रत्युत्तर प्रेम से दें। महाभारत के शांति पर्व में भी निर्देश दिये गये हैं कि समय (शेष पेज 4 पर)

प्रश्न -मेरा यह प्रश्न है कि शिव बाबा ब्रह्मा तन में ही क्यों आते हैं। उन्होने ब्रह्मा को ही क्यों चुना? दूसरी बात यह है कि कई लोग कह देते हैं कि मेरे में शिव बाबा आते हैं, यह कहाँ तक सत्य है?

उत्तर - देखिये बन्धु, ज्ञान के सागर, त्रिकालदर्शी परमात्मा के चुनाव में आपको संशय नहीं होना चाहिए। वह स्वयं जानते हैं कि उन्हें किसके रथ में बैठना है, वे सर्वशक्तिवान हैं, वे जिस तन में आते हैं, उनका मस्तिष्क बहुत शक्तिशाली होना चाहिए अन्यथा वह ब्रेन उस शक्ति को स्वयं में समा नहीं सकेगा, देह स्थिर भी नहीं रह पायेगी। जैसे आपने देखा हो जब किसी के तन में भी कोई आत्मा आती है तो उसका सिर भी हिलता रहता है। भगवान किसी के तन में आये तो वह ब्रेन बहुत शक्तिशाली होना चाहिए। ब्रह्मा का ब्रेन ही इतना शक्तिशाली है।

दूसरी बात -जब किसी के तन में आकर कोई कहता है कि मेरे तन में शिव बाबा आते हैं, वास्तव में वो भगवान नहीं होते। कोई भी भटकती आत्मा अपना वह रूप दिखा देती है। भगवान सबके तन में नहीं आ सकते। जिसके तन में भगवान आयें वह परम पवित्र भी होना चाहिए। जो देहधारियों के लगाव को चालीस-पचास वर्ष में भी नहीं भूले, उनके तन में भगवान भला कैसे आयेंगे। इसलिए इस भ्रम से सदा दूर रहना चाहिए। अन्यथा आप पुन: सत्य मार्ग से भटक जायेंगे।

ऐसे कई केस हमारे सामने भी आये। किसी आत्मा ने किसी के तन में प्रवेश करके कहा कि मैं शिव बाबा हूँ, फिर भोग खाकर बता दिया कि मैं शिव बाबा नहीं हूँ, मैंने तो भोग खाने के लिए ऐसा कहा था।

प्रश्न -बाबा ने हमें क्रोध पर विजय पाने को कहा है। मैं इस पर काफी ध्यान रखती हूँ। परन्तु जब मेरा पति मुझसे झूठ बोलता है तो मुझे बहुत क्रोध आ जाता है। फिर बाद में मुझे पश्चाताप होता है। मैं इससे भी मुक्त होना चाहती हूँ।

उत्तर - आपका पति झूठ बोलता है और आप क्रोध करती हैं, सचमुच आप दोनों ही महान हो। वह झूठ बोलकर गलती करता है और आप उसकी गलती को दूसरी बड़ी गलती से ठीक करना चाहती हो -क्या यह सम्भव है? क्रोध करना झूठ बोलने से कहीं ज्यादा घातक है। हो सकता है आपका पति डर के कारण झूठ बोलता हो, आप उसे भयमुक्त कर दो, तो वह झूठ बोलेगा ही नहीं। आपका क्रोध दबा हुआ है, जो तब प्रकट होता है, जब आपकी कामना पूर्ण नहीं होती। आप चाहती हैं कि पति झूठ न बोले। आप इस कामना का त्याग कर दें और अति स्नेह व अपनेपन से उन्हें उनकी गलती का एहसास करायें। वास्तव में कामना ही क्रोध का कारण है। कामना अच्छी भी हो सकती है परन्तु श्रेष्ठ कामना में यदि क्रोध का विष भी घुल जाए तो वह खुशी व शक्ति को नष्ट कर देता है। आप कामनाएँ छोड़ें, सरलचित्त बनें व संकल्प कर लें कि दूसरों के द्वारा ये तो सब कुछ होता ही रहेगा, परन्तु मुझे अपनी स्थिति नहीं बिगाड़नी है।

प्रश्न -मैं एक माता हूँ। मुझे दो बच्चे हैं, एक सोलह वर्ष का, दूसरा चौदह वर्ष का। दोनों पढ़ने में होशियार हैं परन्तु मुझे दोनों के भविष्य की बहुत चिन्ता रहती है। मुझे डर भी रहता है कि मेरे बच्चों को कुछ हो न जाए।

उत्तर - आपके दोनों बच्चे पढ़ने में होशियार हैं फिर भी आपको चिन्ता...यह गलत है। आपको जो कुछ करना है वो यह कि बच्चों को सुसंस्कारित करें। उन्हें इतना लाड प्यार भी न दें कि वे बिगड़ जाएं। प्यार व मर्यादा दोनों का संतुलन रखें। माँ बच्चों की सर्वश्रेष्ठ गुरू होती है। आपको ध्यान रहे बच्चों की इस आयु में, आपके प्रत्येक संकल्प का, आपके संस्कारों का, आपके व्यवहार का, आपकी पवित्रता का व आपकी योगयुक्त व स्वमान युक्त स्थिति का सीधा प्रभाव उन पर पड़ता है। आपकी ये सम्पूर्ण स्थिति जितनी श्रेष्ठ होगी, आपके बच्चे योग्य व चरित्रवान बनेंगे।

चिन्ता से निगेटीव एनर्जी बच्चों को जाती है। आप उनके लिए प्रतिदिन शान्त में बैठकर ये दो संकल्प किया करें...ये दोनों आत्माएँ देव कुल की महान आत्माएँ हैं, ये चरित्रवान हैं और इनका भविष्य बहुत ही उज्जवल है। आपको यह रहस्य भी ख्याल में रखना है कि हमारे प्रत्येक संकल्प में रचनात्मक शक्ति है। जो संकल्प हम बार-बार करते हैं उसका हम निर्माण करते हैं। इसलिए भयमुक्त होकर कोई भी गलत संकल्प बार-बार न करें। बल्कि इस तरह सोचा करें कि मेरे बच्चों के साथ तो स्वयं भगवान हैं - वे उनकी छत्रछाया में सुरक्षित हैं। यह भी आप ध्यान रखें कि इस आयु में वे बुरे संग में न आयें। आजकल लेपटाप और मोबाइल का दुरूपयोग भी बच्चों को बिगाड़ता है, इसके बारे में बच्चों को आदेश ही न दें बल्कि इनसे होने वाले नुकसान की भी जानकारी दें।

प्रश्न -मेरा प्रश्न है कि आप भी कहते हैं और बाबा स्वयं भी कहते हैं कि दिल से कहो, मेरा बाबा, प्यारा बाबा, मीठा बाबा तो तुरंत बाबा की मदद अनुभव होगी। परन्तु हम पाते हैं कि कुछ लोगों को तो बहुत मदद मिलती है, जबकि हमें उनकी मदद का एहसास नहीं होता। बाबा की ओर से यह भेदभाव क्यों है?

उत्तर - बाबा की ओर से भेदभाव कभी नहीं होता। जो बात आपने कही वह स्वयं उन्होने ही कही है। स्वयं भगवान ने वचन दिया है कि जब भी दिल से तुम मेरा आहवान करोगे तो बाप बंधा हुआ है मदद करने के लिए। तो क्या वह अपने वचन को निभायेगा नहीं। हम लौकिक अनुभवों से भी जानते हैं कि किसी माँ-बाप का कोई बच्चा यदि बीमार है तो वे कैसे बच्चे को मदद करते हैं। शिव बाबा तो हमारा ऐसा मातपिता है जो हमें बहुत प्यार करता है और उसका स्वभाव ही है कि जब भी कोई प्यारा बच्चा उसे याद करेगा, वह उसकी मदद के लिए दौड़ा चला आयेगा। वह तो मदद देता है, परन्तु कहीं-कहीं हम ही उनकी मदद को ग्रहण नहीं कर पाते। ध्यान दें कौन हैं जो उसकी मदद को रिसीव नहीं कर पाते -

वे जो व्यर्थ संकल्पों में ज्यादा रहते हैं। जो अपनी बुद्धि रूपी लाइन को व्यस्त रखते हैं। जो जीवन में पवित्रता को नहीं अपनाते। जो उनकी आज्ञाओं पर ध्यान नहीं देते। जो उसे सच्चे दिल से प्यार नहीं करते, जिनका प्यार बंटा हुआ है। जिन्होने उनसे सच्चा नाता नहीं जोड़ा है। जो उन्हें अपना नहीं मानते। जो अमृतवेले योगयुक्त नहीं होते और वे जो उनके स्थापना के कार्य में सहयोग नहीं देते...

आप चेक कर लें। शिव बाबा को अपना बना लो। वह आवाज देते ही दौड़ा चला आयेगा। वह आपको अपनी बांहों में उठाकर रखेगा। हाँ, यदि आपके विकर्म ही मुंह खोले सामने खड़े हों तो कुछ समय आपको धैर्यता पूर्वक इंतजार भी करना होगा। स्वयं को पूर्णत: समर्पित कर दो...तुम जिस विधि राखो, हम उस विधि रहिये...।